ORIGINAL RESEARCH PAPER

ARTS

हिंदी साहित्य में विभाजन का दर्द

KEY WORDS: विभाजन, त्रासदी, हिंदी साहित्य, मानवता।

युगल किशोर यादव सहायक प्रोफेशर, तिनसुकिया कामर्स कॉलेज

ABSTRACT

आज से लगभग ७२ साल पहले भारत एक विशाल देश हुआ करता था। किंतु उस समय भारत ब्रिटिश हुकूमत के अधीन गुलामी की जंजीरों में जकड़ी स्वाधीनता के लिए छटपटा रही थी। भारत ब्रिटिश हुकूमत के ताज का चमकता हुआ सितरा हुआ करता था इसमें कोइ शक नहीं था। दिन पर दिन उनके अत्याचार एवं शोषण देशवासियों पर बढ़ती जा रही थी। लोगों ने अनुभव किया कि अब गुलामी की बेड़ियों को तोड़ा जाए और देश को आजादी दिलायी जाए। यह तभी संभव हो सकता है जब सभी एकत्र होकर ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ आवाज उठाए। मातृभूमि के प्रति अखंड प्रेम एवं देशवासियों में देशभक्ति की भावना ने ब्रिटिश सरकार की जड़ें हिलाकर रख दी। सन्१९४७ को भारत को आजादी मिली। लेकिन इस आजादी की सबसे बड़ी कीमत देश तथा देशवासियों को 'विभाजन' के रूप में चुकानी पड़ी। 'भारत' भारत रह गया, किंतु उसके दुसरे टुकड़े से 'पाकिस्तान' नामक इस्लामिक देश का जन्म हुआ। धर्म के आधार पर विभाजन की नींव रखी गई। हिंदु और मुस्लमान दो अलग-अलग धर्म हैं, उनके विचार, धारणाएँ, रीति-रिवाज बिल्कुल अलग हैं। कुछ लोगों का मानना था की ऐसे में दो अलग-अलग राष्ट्र का निर्माण जरूरी है। निश्चित रूप से भारत विभाजान ब्रिटिश सरकार के षड्यंत्र एवं कुछेक राजनेताओं की व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं का ही परिणाम था, जिसकी वजह से देश के दो टुकड़े किये गए , फलस्वरूप यहीं से शुरू होती है विभाजन की त्रासदी।

प्रस्तावना:

सन्१९४७ वह समय था जब भारत जैसे विशाल देश के टुकड़े कर हिंदोस्तान और पाकिस्तान नामक दो अलग-अलग राष्ट्रों का निर्माण किया गया। कहीं आजादी की खुशी मनायी जा रही थी तो कहीं विभाजन का मातम छाया हुआ था। भारत-पाक विभाजन की सबसे बड़ी कीमत दोनों देशों की मासूम जनता को चुकानी पड़ी। धर्म के आधार पर जो विभाजन किया गया उसने लोगों में धार्मिक कट्टरता के उन्माद भर दिए। लूट-मार, हत्याएँ, बलात्कार, तरह-तरह की हिंसा के दर्द से दोनों देशों की पवित्र भूमियाँ रो रही थी। लाखों-करोड़ों लोगों को अपने ही मुल्क से बेदखल कर उन्हें शरणार्थी बनने को मजबूर कर दिया। स्वदेश दीपक के ये शब्द तत्कालीन यथार्थ का बोध कराती है "अंग्रेज जाते-जाते बँटवारा करा गये और विरासत में एक शब्द दे गये – रिफ्यूजी।"[१]

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जो अपने समसामयिक परिस्थितियों की गवाही देता है। साहित्य की रचना करनेवाला साहित्यकार अपनी कलम की जादू से समाज के दर्द को आवाज देता है। अत: हिंदी साहित्य भी विभाजन के दर्द से खुद को अलग नहीं रख पाया है। विभाजनकालिन भयानक परिस्थितियों से उत्पन्न आमजनता के दर्द को हिंदी साहित्य में जुबानी मिली है। बँटवारे ने देश और समाज को जो दिया वह बहुत ही भयानक तथा दर्द देने वाला था, जिसका जीता-जागता यथार्थ चित्रण लेखकों ने अपनी रचनाओं में किया हैं।

शरणदाता (अज्ञेय)

अज्ञेय की 'शरणदाता' कहानी भारत-पाक विभाजन के समय घटित घटनाओं पर आधारित विभाजन के दर्द को बयां करती है। देविंदरलाल, जो कहनी के मुख्य पात्र है, शुरू से अंत तक अपनी जान बचाने के लिए पिंजरे में कैद पंछी की तरह छटपटाते दिखलाई पड़ते है। रफीकुद्दिन उनके घनिष्ट मित्र थे। दोनों के धर्म भले ही अलग रहे हो, किंतु उनमें एक-दुसरे के प्रति जो आत्मीयता थी, जो प्रेम था, वह सगे भाईयों जैसा था। बँटवारे के बाद का जो समय था वह बद से बदत्तर होती जा रही थी। उन्माद और तनाव के माहौल में देविंदरलाल अपने मित्र रफीकुद्दिन के घर शरण लेने को मजबूर होते हैं। रफीकुद्दिन ने अतिथि सेवा में कोई कमी नहीं छोड़ी। लेकिन अपने बिरादरी वालों के सामने उनकी लाचारी जवाब दे गयी। "आखिर तो लाचारी होती है। अकेले इंसान को झुकना ही पड़ता है।"२ रफीकुद्दिन के ये शब्द देविंदरलाल के मन में निराशा तथा शंका के भाव पैदा करने को काफी थें। अंत में शेख अत्ता उल्लाह के घर उनके रहने का प्रबंध एकांत बने गैराज में कर दिया जाता है, किंतु हिंसा से बचकर आये देविंदरलाल को मारने की साज़िश की जाती है। उन्हें भोजन के साथ ज़हर दिया जाता है, किंतु वे बच जाते हैं क्योंकि यहाँ हिंसा के माहौल में उसे बचाने वाला कोई है अत्ता उल्लाह की बेटी जैबू। जैबू नष्ट होती हुई मानवता के प्रति विश्वास का ही प्रतिक है।

मलबे का मालिक (मोहन राकेश)

'मलबे का मालिक' देश विभाजन पर केंद्रित मोहन राकेश की महत्वपूर्ण कहानी है। भारत और पाकिस्तान, नव स्वतंत्र देशों की नींव धर्म के आधार पर रखी गई थी, जिसने लाखों-करोड़ों लोगों को एक देश से दूसरे देश पलायन करने को मजबुर कर दिया। निश्चित रूप से यह पलायन मानव इतिहास का सबसे बड़ा तथा सबसे हिंसक व भयानक पलयान था। गनी मियां भारत छोड़ पाकिस्तान चले गए, उनका परिवार भारत में ही रह गया। भविष्य से बेखबर गनी मियां के बेटे तथा उनके परिवार को भारत में ही उनके जान-पहचान वालों (रक्खा पहलवान) द्वारा पाकिस्तान दे दिया गया अर्थात उनकी निर्मम हत्या कर दी गयी। कई वर्षों बाद जब गनी मियां हाँकी मैच देखने के बहाने भारत आते हैं तब उन्हें अपने वतन की मिट्टी की खुसबू मोह लेती है। पुरानी यादें ताजा हो उठती हैं, उनमें अपने परिवार से मिलने की आशा जाग उठती है। परंतु वास्तविकता से बेखबर गनी के लिए यहाँ रखा ही कुछ और था। जैसे ही वे अमृतसर की गलियों में कदम रखते हैं, यह अफवाह फैल जाती है कि कोई मुसलमान बच्चा उठाने के उद्देश्य से घुम रहा है। स्त्री के वे शब्द "चुपकर मेरा वीर! रोएगा तो तुझे वह मुसलमान पकड़कर ले जाएगा।"३ जो निश्चित रूप से लोगों के मन में बैठे घृणा, हिंसा तथा दहशत की भावना को ही प्रकट करती है।

विभाजन ने साम्प्रदायिकता को जन्म दिया, जिसने लोगों में धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा दिया। लोगों की एक-दुसरे के प्रति भावनाएँ बदलीं, पड़ोसियों ने एक-दुसरे के खून बहाए, दोस्तों ने दोस्तों को मारा। "रक्खे! उसे तेरा बहुत भरोसा था। कहता था कि रक्खे के रहते कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मगर जब आनी आई तो रक्खे के रोके न रूक सकी।"४ गनी मियां के इन शब्दों के आगे रक्खा पहलवान खुद को लाचार महसूस करता है। जिस मनसा से उसने गनी के बेटे और उसके परिवार की हत्या की थी वह पुरी न हो सकी। उसे न वह घर मिला न ही उनकी जमीन, हाथ आया तो सिर्फ मलबा।

मोहन राकेश ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार स्वार्थ के लिए, लालच में लोग निर्दोषों का खून कर देते हैं, इसी संवेदनहीन मानसिकता की वजह से इंसानियत नष्ट होकर मलबे में तब्दील हो रही है। इसी संवेदनहीन मानसिकता तथा हृदयहीनता की वजह से गनी मियां ने अपना सब कुछ खो दिया। मोहन राकेश ने यह बताने की कोशिश की है कि यह सिर्फ गनी मियां का ही दर्द नहीं है बल्कि विभाजन के सताए उन तमाम लोगों का दुख हैं जिन्होंने विभाजन को देखा है उसके दर्द को भोगा है।

अमृतसर आ गया है (भीष्म साहनी)

'अमृतसर आ गया है' शीर्षक कहानी विभाजन के बाद उत्पन्न स्थिति सापेक्ष मनुष्य की क्रूर तथा हृदयहीन मानसिकता को दर्शाती है। उस समय देश का माहौल ऐसा बन चुका था जहाँ मानवीय संबंधों की अहमीयत ना के बराबर रह गयी थी, विपरीत परिस्थितियाँ हत्यारी मनोवृत्तियों को जन्म दे रही थी।

भारत की आजादी की घोषणा ने मानो पूरे देश में खुशी की लहर फैला दी। नव स्वतंत्र देश की स्वधीनता दिवस की साखी बनने की इच्छा लिए बड़ी तादाद में लोग रेलगाड़ी में बैठ दिल्ली को रवाना हुए। किंतु पाकिस्तान बनाए जाने की खबर ने सबको मायूस व हताश कर दिया। एक तरफ पाकिस्तान बनाए जाने का जोश था तो दूसरी ओर हिंदुस्तान की आजादी की खुशी। लेकिन इन सबके बावजूद एक अलग सी खामोशी और व्याकुलता ट्रेन में थी। अचानक ऐसा कुछ हुआ, जिसने सबकुछ बदलकर रख दिया। "कहीं कुछ था। 'मैं' अनेक दंगे देख चुका था। इसलिए वातावरण में होने वाली छोटी-सी तब्दीली को भाँप गया था। भागते व्यक्ति, खटाक से बंद होते दरवाजे, घरों की छतों पर खड़े लोग, चुप्पी और सन्नाटा सभी दंगे के चिन्ह थें।"[२]

गाड़ी के अंदर का माहौल बिल्कुल ही बदल गया, लोगों में बेचैनी और चुप्पी बढ़ती ही जा रही थी। एक व्यक्ति जो पठान था, व्याकुलता भरे वातावरण में चुप्पी को तोड़ते हुए बाबू से बात करनी चाही, लेकिन बाबू ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई (जो सफर की शुरूआत साथ किए थे अच्छे दोस्त बन चुके थें)। जैसे-जैसे अमृतसर पास आता गया बाबू की प्रतिक्रियाओं में परिवर्तन आता गया। वह उत्तेजित होकर पठान पर चिल्लाने लगा, उन्हें गलियाँ देने लगा। धीरे-धीरे बाबू की प्रतिक्रिया हिंसक रूप ले चुका था। ग़नीमत रही कि पठान दूसरे डिब्बे में चले गए। उन्हें पास न पाकार गुस्से से लाल बाबू गाड़ी पर चढ़ रहे एक बूढ़े मुसलमान व्यक्ति पर लोहे की छड़ से वार कर नीचे गिरा देता है और लोगों की प्रशंसा लूटते हुए गर्व का अनुभव करता है। कितनी ताज्जूब की बात है जो किसी समय सफर के साथी थें, हमदर्द थें, चंद पलों में बदल गए। यह कहनी क्रूर तथा हृदयहीन मानसिकता के कारण खत्म होती हुई मानवीयता के प्रति चिंता को दर्शाती है।

उजड़ गया मेरा पड़ोसी (संतोख सिंह धीर, हिंदी अनुवाद: गुरचरण सिंह)

'उजड़ गया मेरा पड़ोसी' मूल रूप से संतोख सिंह धीर द्वारा रचित पंजाबी कहानी है जिसका हिंदी अनुवाद गुरचरण सिंह ने किया है। विभाजन के सताए आम जनता की मनोदशा एवं उनकी दयनीय दशा को व्यक्त करती यह एक बहुत ही मार्मिक कहानी है।

किसी ने सोचा नहीं था कि विभाजन होगा और उसके परिणाम इतने भयानक होंगे। बँटवारे से पहले पूरा देश एक परिवार की तरह रहता था किंतु बँटवारे की आग ने सबकुछ स्वाह कर दिया। यह कहानी मजहब के नाम पर सताए लोगों के दर्द की कहानी है। गुरबचन सिंह और दुल्ला एक-दुसरे के पड़ोसी थे, दोनों में आपसी प्रेम और आत्मीयता अपनों जैसा था। किंतु बँटवारे ने सबकुछ खत्म कर दिया। भारत-पाक बँटवारे ने दुल्ला को भारत छोड़कर पाकिस्तान जाने को मजबूर कर दिया है। गुरबचन सिंह असहाय भाव से अपने पड़ोसी के उजड़ते संसार को देखने को मजबूर है। "समय का फेर है दुल्ला, कुछ हवा ही बुरी चल पड़ी है। अच्छे भले आदमी पशु बन गये है।"६ इंसानी ज़िन्दगी को बँटवारे की कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी, इसकी कल्पना कर रूह कांप उठती है। तभी तो दुल्ला की इच्छा पंछी बन खुले आसमान में स्वतंत्र उड़ने की हो रही है जहाँ न कोई धर्म की बंदिशें होंगी न ही कोई सरहदें उसे रोक पाएँगी। "यदि मैं कहीं कौवा बन जाऊ.....जाती-बार तो अपने गाँव की मुंडरोर खूब उड़ूँ.....मेरी जान को कोई खतरा नहीं होगा.....मेरा कौन सा कोई मजहब होगा।"[३]

मैं जिंदा रहूँगा (विष्णु प्रभाकर)

आजादी के बाद बँटवारे की वजह से जो परिस्थितियाँ उभर कर सामने आयी, उसने सामुदायिक जीवन के हर पहलु को बदल कर रख दिया। जिसका यथार्थ चित्रण विष्णु प्रभाकर की कहानी 'मैं जिंदा रहूँगा' में देखने को मिलता है। बँटवारे ने लोगों के मन में इस प्रकार की साम्प्रदायिक मनोवृतियाँ भर दी, जिसने मनुष्य को मनुष्य का दुश्मन बना दिया। "मनुष्य-मनुष्य का रक्त उलीचने में होड़ ले रहा था। नारी का सम्मान और शिशु का शैशव सब पराभूत हो चुके थे। मनुष्य का मनुष्यत्व ही नष्ट हो चुका था। भागते मनुष्यों पर राह के मनुष्य टूट पड़ते और लाशों का ढेर लगा देते, रक्त बहता और उसके साथ ही बह जाती मानवता।"[४]

इनके अतिरिक्त भी हिंदी साहित्य में बहुत सारी कहानियाँ लिखी गई हैं जिनमें विभाजन का शिकार हुए आमजनता की तड़प तथा उनकी चीख़ा-पुकार सुनने को मिलती है। विभाजन से पूर्व लोगों में जो आपसी प्रेम तथा सौहार्द्र की भावना थी विभाजन के बाद वह नहीं रही। जिन्होंने कभी हत्या के बारे में सोचना भी पाप समझा था, वे भी हत्यारे बने फिर रहे थें। मानवता का कहीं नामो-निशान न रहा। ऐसी परिस्थिति में मानवता की पुन:स्थापना की जरूरत थी। तभी तो 'शरणदाता' कहानी की 'जैबू' हिंसा और घृणा के माहौल में बची मानवता का ही प्रतीक है।

"आप बचकर चले गए , इसके लिए खुदा का लाख-लाख शुक्र है।.....अहसान नहीं जताती। मेरा कोई अहसान आप पर नहीं है, सिर्फ यह इल्तजा करती हूँ कि आपके मुल्क में अलकीयत का कोई मजलूम हो तो याद कर लीजिएगा। इसलिए नहीं कि वह मुसलमान है, इसलिए कि आप इंसान है।"[५]

निष्कर्ष

भारत-पाक विभाजन का दर्द कितना भयानक था, जिसने लाखों-करोड़ों लोगों की जिंदगी बदल कर रख दी। हिंदी साहित्य भी विभाजन के दर्द से खुद को अछूता नहीं रख पाया। हिंदी साहित्य के अधिकत्तर साहित्यकार इस विभाजन के साक्षी बने थें, उन्होंने देश विभाजन को अपनी आँखों से देखा था, विभाजन के दर्द को महसूस किया था। तभी तो वे आमजनता के दर्द को गहराईता से महसूस करते हैं तथा उनके प्रति संवेदनशील हैं। वे चिंतित थें कि जो मानवीयता बँटवारे की आग में झुलसकर दम तोड़ती हुई सी दिख रही थी उसे कैसे बचाया जाए। हमारे पुराने पीढ़ी के वे लोग

जिन्होंने बँटवारे के दर्द को झेला है, आज विभाजन की बात कोई नहीं करना चाहता, क्योंकि यह दर्द देने वाली घटना है, पुरानी घावों को कुरदने वाली बात है। जो घाव विभाजन ने दिए धीरे-धीरे समय के साथ साथ भले ही भर रही हो/ भर गया हो, किंतु उसकी टीस देश तथा देशवासियों के हृदय में आज भी देखने को मिलता है।

संदर्भ:

1) स्वदेश दीपक, रिफ्यूजी, www.hindisamaya.com
2) अज्ञेय, शरणदाता, www.hindisamaya.com
3) मोहन राकेश, मलबे का मालिक, www.hindisamaya.com
4) वही
5) भीष्म साहनी, अमृतसर आ गया है, www.hindisamaya.com
6) संतोख सिह धीर, उजड़ गया मेरा पड़ोसी (हिंदी अनुवाद: गुरचरण सिह), www.hindisamaya.com
7) वही
8) विष्णु प्रभाकर, मैं जिंदा रहूँगा, www.hindisamaya.com
9) अज्ञेय, शरणदाता, www.hindisamaya.com